

सोम

क्र. नं. १२६

संस्कृत

आनंद लक्ष्मी - दादशस्त्रोत्तरे दादशोत्तरे

१९६६/२२.५५



(1)

॥ श्रीवेदव्यासाय नमः ॥ हरिः ॐ विश्वस्थिति ॥ यस्या ॥ १ ॥ ब्रह्मे
शशक्त ॥ आश्रित्य विश्व ॥ २ ॥ धर्मार्थ ॥ आ० तत्प्रणत ॥ ३ ॥ षड्गुण ॥
आ० मानपि ॥ ४ ॥ शेषादि ॥ आ० विश्वम ॥ ५ ॥ शक्रो ग्रहाधि ॥
आ० नृत्यति ॥ ६ ॥ तत्यादय ॥ आ० नाग ॥ ७ ॥ नागारि ॥ आ० श ॥
आनंद ॥ भक्त्या ॥ ८ ॥ इति श्रीमदा० भ० द्वा० सत्यमो ध्यायः ॥ ९ ॥
वंदिता ॥ प्रीणयामो ॥ १० ॥ सृष्टि ॥ प्री ॥ ११ ॥ उन्नता ॥ १२ ॥ विप्रमु ॥
अत्ययो ॥ १३ ॥ पश्यतां ॥ १४ ॥ अमजं ॥ १५ ॥ अभ्युतो ॥ १६ ॥ धार्यते ॥

द्वारं

(2)

सं० ३१०
११२

सर्वपापा ॥ १० ॥ अक्षयं ॥ ११ ॥ नंदितीर्थे ॥ १२ ॥ इति ८ अध्यायः
अतिमति ॥ १ ॥ विधिभव ॥ २ ॥ अगणितु ॥ ३ ॥ अपरमित ॥
स्फुरेत् ॥ ४ ॥ प्रबलित ॥ ५ ॥ स्फुरदिगिग ॥ ६ ॥ सागिरि ॥ ७ ॥ अलि
बलदि ॥ ८ ॥ बलिमु ॥ विजयदि ॥ ९ ॥ अविजितकु ॥ १० ॥
सुललित ॥ १२ ॥ हिसुग ॥ १३ ॥ कलिमल ॥ १४ ॥ इति १५
इति ९ अध्यायः ॥ अवनश्री ॥ १ ॥ सुरवंद्यादि ॥ २ ॥ सकलधातु ॥ ३ ॥

॥ १ ॥

॥ १ ॥

(2A)

त्रिजगत्प्रात ॥४॥ त्रिगुणातीत ॥५॥ शरणंकारण ॥६॥ मरण
प्राणद ॥७॥ तस्या ॥८॥ रत्निलेख ॥९॥ रक्ताणी ॥१०॥ इमे
हस्त ॥११॥ असनेसुख ॥१२॥ शान्तमादा ॥१३॥ जगद्गुरुक ॥१४॥
जगद्वामल ॥१५॥ द्विजित ॥१६॥ परम ॥१७॥ निरिक्ता ॥१८॥
परमानंद ॥१९॥ इति १०० ध्यायः ॥ उदीर्णमजरंशिव्य ॥ आनंद ॥१॥
सर्ववेदपते ॥२॥ सर्वदेवादि ॥३॥ उदार ॥४॥ दातृ ॥५॥ इंदीरे ॥६॥

(3)

दूरादुर० ॥ पूर्णसर्व० ॥ ८ ॥ आनंद० ॥ कृतं लोत्रं ॥ १ ॥ इति ॥
शुद्धायः ॥ आनंदमकुं ॥ आनंदतीर्थं ॥ १ ॥ सुंदरीमंदिरं ॥ २ ॥
वंद्रिकमंदिरं ॥ वंद्रसेरुं ॥ ४ ॥ वंदारक ॥ ५ ॥ मंदार ॥ ६ ॥ इति
दिरानं ॥ ७ ॥ मंदिरास्येकं ॥ आनंदवंद्रिका ॥ आनंदतीर्थं ॥ १ ॥
इति श्रीमदानंदतीर्थभगवत्पादाचार्यविरचिते द्वादशश्लो
त्रे द्वादशोऽध्यायः ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥
श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ ॥ २ ॥

॥ २ ॥

॥ २ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com